National Journal of Advanced Research
www.nationaljournals.com
ISSN: 2455-216X
Received: 13-06-2026, Accepted: 13-07-2026, Published: 28-07-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 8-10

आचार्य नरेन्द्र देव जी के शिक्षा का माध्यम तथा अनुशासन संबंधी विचारों का अध्ययन तथा उसकी सार्थकता

महेन्द्र प्रताप सिंह पटेल[1], डॉ. रूपाली[2]
[1] शोधकर्ता, (शिक्षाशास्त्र), श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] शोध निर्देशिका, (शिक्षाशास्त्र), श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, भारत

सरांश
प्रस्तुत शोध में आचार्य नरेन्द्रदेव जी के शिक्षा का माध्यम तथा अनुशासन संबंधी विचारों का अध्ययन तथा उसकी सार्थकता को प्रस्तुत किया गया। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य आचार्य नरेन्द्रदेव जी के अनुसार शिक्षा के माध्यम का अध्ययन करना तथा आचार्य नरेन्द्रदेव जी के अनुसार अनुशासन के सम्बन्ध में विचारों का अध्ययन करना।
वर्तमान अध्ययन आचार्य नरेन्द्रदेव जी के ग्रन्थों, लेखों तथा अन्य स्रोतों के आधार पर उनके शिक्षा का माध्यम तथा अनुशासन संबंधी विचारों को सुव्यवस्थित किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में ऐतिहासिक अनुसंधान विधि को चुना गया। प्रस्तुत अध्ययन में आचार्य नरेन्द्रदेव जी द्वारा रचित विभिन्न पुस्तकों, लेखों, पत्रों तथा आचार्य नरेन्द्रदेव जी के बारे में विभिन्न विद्वानों एवं लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों, लेखों तथा अन्य अध्ययन सामग्री का प्रयोग किया गया।
आचार्य जी मातृभाषा व राष्ट्रभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने के पक्षधर थे। उनका यह मानना था कि हाईस्कूल तक की शिक्षा मातृभाषा में हो और ऐसा सभी लोग मानते हैं। उनका कहना था कि– जिस प्रकार राष्ट्र भाषा को उच्चतर शिक्षा के माध्यम के रूप में स्वीकार कर लेने से सारे देश के लिए विचार करने और उसे व्यक्त करने के लिए एक माध्यम मिल जायेगा, उसी प्रकार एक लिपि द्वारा अर्न्तप्रान्तीय एकता की भावना उत्पन्न करने और उसे अग्रसर करने में सहायता मिलेगी।
आचार्य जी अनुशासन को शिक्षा के लिये आवश्यक मानते थे। उनके अनुसार–प्राचीन अनुशासन, पद्धति आधुनिक लोकतांत्रिक युग के लिये उयुक्त नहीं है। वे चाहते थे कि विद्यार्थियों में स्वाशासन की भावना पुष्ट किया जाये, उनमें सामाजिक प्रबन्ध की क्षमता पैदा की जाये, स्कूल के अनुशासन और प्रबन्ध के स्तर को ऊँचा उठाया जाये। आचार्य जी के अनुसार अनुशासन स्थापित करने के प्राचीन तरीकों का त्याग करके हमे आधुनिक तथा मनोवैज्ञानिक तरीकों को अपनाना चाहिये जिससे छात्रों में लोकतांत्रिक भावना का विकास हो सके तथा वे स्वयं अनुशासित हो सकें।

मुख्य शब्दः आचार्य नरेन्द्रदेव जी, शिक्षा का माध्यम तथा अनुशासन

आज की शिक्षा को केवल ज्ञान देने का साधन ही माना जा रहा है परन्तु शिक्षा जब तक जीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं मान्यताओं का परिचय नहीं देती तब तक वह शिक्षा नहीं कही जा सकती। इस सम्बन्ध में महान विचारक डा0 राधाकृष्णन ने कहा है– ''शिक्षा सूचना प्रदान करने एवं कौशलों का प्रशिक्षण देने तक सीमित नहीं है। इसे शिक्षित व्यक्ति को मूल्य का विचार भी प्रदान करना है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी व्यक्ति भी नागरिक है। अतः जिस समुदाय में वे रहते है उस समुदाय के प्रति भी उनका सामाजिक उत्तरदायित्व है।''
आज की शिक्षा प्रणाली इतनी दूषित हो गई है कि इसमें मूल्यों, आदर्शों और संस्कारों का कोई स्थान नहीं रहा। भारतीय शिक्षा के इसी दोष की ओर संकेत करते हुए सन् 1952 में कानपुर में हुए अखिल भारतीय कांग्रेस के 40 अधिवेशन में सरोजनी नायडू ने कहा था– ''हमारी शिक्षा ने हमें उपयुक्त मानसिक मूल्यों एवं पृष्ठभूमि से रहित कर दिया है तथा आत्म– प्रकाशन की अधिकारपूर्ण शैली को खोजने में जो सच्ची लगन एवं मौलिकता की अपेक्षा है उससे भी वंचित कर दिया है।''
भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न शैक्षिक विचारधाराओं का विकास हुआ, जिन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा–व्यवस्था को प्रभावित किया, जैसे–दयानन्द का आर्य दर्शन, विवेकानन्द का नव्य वेदान्त दर्शन, टैगोर का विश्वबोध दर्शन, अरबिन्द का सर्वांग योग दर्शन, गाँधी, विनोबा का सर्वोदय दर्शन तथा डॉ. लोहिया एवं नरेन्द्र देव का समाजवादी दर्शन आदि। इन सभी शिक्षा–शास्त्रियों ने अपने दर्शन के आधार पर शिक्षा–प्रक्रिया के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित किया और उसे एक नई दिशा प्रदान की। टैगोर, गाँधी, अरबिन्द, दयानन्द, विवेकानन्द, डॉ. लोहिया एवं नरेन्द्र देव के शैक्षिक चिन्तन और प्रयोगों का प्रभाव आज भारतीय शिक्षा में स्पष्ट रूप में दिखाई देता है। आज पूरे देश में शिक्षा का माध्यम मातृ भाषायें हैं, जन–शिक्षा, स्त्री शिक्षा, व्यवसायिक शिक्षा, मानव धर्म की शिक्षा, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा तथा शैक्षिक सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में जो समानता है, वह इन्हीं शैक्षिक विचारधराओं का मूर्तरूप है।
सभी शिक्षा–शास्त्रियों ने अपनी शैक्षिक विचारधाराओं के आधार पर शिक्षा–पद्धतियों तथा अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्रों की स्थापना की है जिसमें प्रमुख टैगोर का शांति निकेतन, अरबिन्द का अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र, रामकृष्ण मिशन, आर्य समाज संस्था तथा गाँधी जी का वर्ध आश्रम और उनके बेसिक शिक्षा–पद्धति आदि। कहने की आवश्यकता नहीं कि इन सभी संस्थानों ने राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा के प्रसार में अहम् भूमिका निभाई है।
आचार्य नरेन्द्र देव एक महान शिक्षा शास्त्री थे उन्होंने एक शिक्षक के रूप में कार्य करके राष्ट्रीय शिक्षा के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया और इस सम्बन्ध में अपने विचारों को प्रकट करके शिक्षा के एक राष्ट्रीय स्वरूप का निर्माण किया जो आज की शिक्षा व्यवस्था के लिए उपयोगी है।

अध्ययन की आवष्यकता एवं महत्व

किसी भी देश की उन्नति का आधार वहाँ की शिक्षा प्रणाली होती है क्योंकि प्रत्येक देश अपने अपने आवश्यकता के अनुरूप नागरिकों का निर्माण करना चाहता है। यह काम शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से होता है क्योंकि जैसे नागरिकों की आवश्यकता होती है उसी के अनुरूप शिक्षा के उद्देश्य निश्चित होते है।
आज हमारी शिक्षा व्यवस्था में अनेक समस्याएँ विकराल रूप में हमारे सामने दिख रही है। स्वतंत्र भारत में सरकार द्वारा नियुक्त

सभी शिक्षा आयोगों, शिक्षा समितियों एवं शिक्षाविद्ों तथा शिक्षा के क्षेत्र में लगे कार्यकर्ताओं का मानना है कि स्वतंत्र भारत के शिक्षा की एकमात्र प्रमुख समस्या यह है कि हमारी शिक्षा केवल विदेशी शिक्षा प्रणाली की नकल है। इस शिक्षा प्रणाली को अंग्रेजों ने अपनी सत्ता स्थापित करने के बाद लागू किया।
इसके पीछे उनका उद्देश्य भारत में सुचारू रूप से सत्ता चलाने के लिए अंग्रेजी जानने वाले क्लर्क (लिपिक) मिलना था क्योंकि भारतीयों से संवाद करने हेतु ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता थी जो दोनों भाषायें जान सकें।
अंग्रेजों ने इस शिक्षा प्रणाली को महज अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए लागू किया। उन्होंने ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली पर आधारित विदेशी शिक्षा प्रणाली भारत में लागू किया तो किया ही लेकिन साथ–साथ उन्होंने परम्परागत शिक्षा प्रणाली जो कि भारतीयों की संस्कृति, सभ्यता के अनुरूप थी, को समूल नष्ट कर दिया। स्वतंत्र भारत में भी थोड़ा बहुत हेर–फेर करके वही विदेशी शिक्षा प्रणाली पूर्ववत चालू है।
शोधकर्ता ने अपने शोध के माध्यम से आचार्य जी के शिक्षा का माध्यम तथा अनुशासन संबंधी विचारों को जानने का प्रयास किया गया, ताकि उनके शिक्षा का माध्यम तथा अनुशासन संबंधी विचारों का अध्ययन कर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इनकी महत्ता देखकर इनको अपनाया जा सके।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

चयनित विषय में अनुसंधान–समस्या का समाधन खोजने में सम्बन्धित साहित्य का पुनः निरीक्षण अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध होता है। शोधकर्ता इसके आधार पर नयी समस्या का चयन व शोध परिकल्पनायें बनाता है। तत्पश्चात् शोधकर्ता समस्या के समाधान हेतु उचित विधि, प्रक्रिया, तथ्यों के साधन और सांख्यिकी तकनीकी का सुझाव देता है। यह परिणामों के विश्लेषण में उपयोगी निष्कर्षों और तुलनात्मक तथ्यों को निर्धारित करता है कि सम्बन्धित अध्ययनों से निकाले गये निष्कर्षों की तुलना की जा सकती है और यह समस्या के निष्कर्षों के लिये भी उपयोगी साबित होता है। यह शोधकर्ता की निपुणता और सामान्य पाण्डित्व को विकसित करने में सहायक होता है।

तिवारी, अरूण प्रकाष (1993) ने: ''आचार्य नरेन्देव एवं डॉ.राम मनोहर लोहिया का समाज दर्शन'' शीर्षक पर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से पी एच. डी. स्तरीय विश्लेषणात्मक शोध कार्य किया और इन्होंने पाया कि दोनों के समाज दर्शन में काफी समानताएँ है। दोनों ही वर्तमान परिस्थितियों में भारतीय समाज में लोकतंत्रात्मक समाजवाद पल्लवित एवं पुश्पित होते देखना चाहते थे।

त्रिपाठी, लक्ष्मी देवी (1993) ने: ''आचार्य नरेन्द्रदेव का समाज दर्शन'' शीर्षक पर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से पी. एच. डी. स्तरीय शोध कार्य किया और निष्कर्ष में पाया गया कि (1) आचार्य जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य नवयुवकों को जीवन के लिए तैयार करना होना चाहिए एवं लोकतंत्र की पुष्टि तथा प्रगति में सहायक हो। (2) उदार लोकतांत्रिक शिक्षा में नागरिकता की शिक्षा का समुचित प्रबंध आचार्य नरेन्द्रदेव जी आवश्यक समझते थे। (3) आचार्य जी अनुशासन को शिक्षा का प्राण समझते थे। (4) आचार्य जी स्त्री–पुरूष की असमानता को स्त्री जाति की उन्नति के लिए बाधक समझते थे। (5) आचार्य जी भारतीय लोकतंत्र के सभी वर्गों और जातियों के बच्चों के लिए उनकी क्षमता और प्रवृत्ति के अनुसार शिक्षा का प्रबंध करना आवश्यक मानते थे। (6) विश्वविद्यालय में वे इस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था करना चाहते थे कि जिससे समाज के विभिन्न क्षेत्रों के लिए ऐसे विशेषज्ञ उपलब्ध हो जो समाज का सर्वांगीण विकास कर सके। (7) आचार्य जी शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए सुयोग्य शिक्षितों को शिक्षा कार्य में आकृष्ट करना आवश्यक समझते थे।

अध्ययन के उद्देश्य

1. आचार्य नरेन्द्रदेव जी के अनुसार शिक्षा के माध्यम का अध्ययन करना।
2. आचार्य नरेन्द्रदेव जी के अनुसार अनुशासन के सम्बन्ध में विचारों का अध्ययन करना।

अध्ययन में सम्मिलित व्यक्तित्व

आचार्य नरेन्द्र देव जी

आचार्य नरेन्द्र देव जी एक उच्च कोटि के व्यावहारिक शिक्षाशास्त्री थे। वे शिक्षा, साहित्य और संस्कृति के न केवल विद्वान थे अपितु, इन क्षेत्रों के सक्रिय कर्मी और नेता भी थे। उन्होंने भारतीय संस्कृति के शाश्वत् तथा परिवर्तनशील मूल्यों को अलग–अलग करने पर भी बल दिया और भारतीय संस्कृति को विशिष्टता का द्योतक बताते हुये भारतीय र्ध्म, पंथ का प्रत्यक्ष प्रस्तुत किया।
आचार्य नरेन्द्र देव जी ने शिक्षा के क्षेत्र में सरकार का पूरा सहयोग किया। 1938 तथा 1951 में नियुक्त उत्तर प्रदेश की प्राथमिक कक्षा से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक की शिक्षा सुधार समितियों तथा मूल्यांकन समितियों की उन्होंने अध्यक्षता का भार भी निभाया। दो–दो विश्वविद्यालयों के उपकुलपति के रूप में उन्होंने तत्कालीन उच्च शिक्षा की दिशा को प्रशस्त कर सराहनीय सेवा की। उन्होंने न केवल शिक्षा के उद्देश्य और शिक्षा के स्वरूप को स्वरूपायित किया, अपितु उन्होंने शिक्षा के माध्यम, विद्यार्थी जीवन में स्वावलम्बन की महत्ता, वांछित अनुशासन के स्वरूप, उन शिक्षा एवं शिखा और र्ध्म के स्वरूप की भी अभीष्ट विवेचना की।

शोध सीमांकन

प्रस्तुत शोध में आचार्य नरेन्द्रदेव जी के शिक्षा का माध्यम तथा अनुशासन संबंधी विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सार्थकता को प्रस्तुत करने का प्रयास किया। यह शोध अध्ययन आचार्य नरेन्द्रदेव जी द्वारा प्रस्तुत, शिक्षा का माध्यम तथा अनुशासन संबंधी विचारों तक ही सीमित रहा।

शोध विधि एवं प्रक्रिया

वर्तमान अध्ययन आचार्य नरेन्द्रदेव जी के ग्रन्थों, लेखों तथा अन्य स्रोतों के आधार पर उनके उनके दर्शन के आधार पर शिक्षा का माध्यम तथा अनुशासन संबंधी विचारों को प्रस्तुत करने हेतु नियोजित किया गया। शोध अध्ययन में ऐतिहासिक अनुसंधान विधि को अपनाया गया।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में आचार्य नरेन्द्रदेव जी द्वारा रचित विभिन्न पुस्तकों, लेखों, पत्रों का तथा आचार्य नरेन्द्रदेव जी के बारे में विभिन्न विद्वानों एवं लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों, लेखों तथा अन्य अध्ययन सामग्री का अध्ययन किया गया।

आचार्य नरेन्द्रदेव जी के शिक्षा का माध्यम तथा अनुषासन सम्बन्धी विचार, निष्कर्ष एवं उसकी सार्थकता।

शिक्षा का माध्यम

आचार्य जी मातृभाषा व राष्ट्रभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने के पक्षध्र थे। उनका यह मानना था कि हाईस्कूल तक की शिक्षा मातृभाषा में हो और ऐसा सभी लोग मानते हैं। लेकिन विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा का माध्यम क्या हो इस पर लोग एक मत नहीं है। नरेन्द्र जी राष्ट्र–भाषा को शिक्षा का माध्यम

बनाने पर जोर देते हैं। उनका कहना था कि– जिस प्रकार राष्ट्र भाषा को उच्चतर शिक्षा के माध्यम के रूप में स्वीकार कर लेने से सारे देश के लिए विचार करने और उसे व्यक्त करने के लिए एक माध्यम मिल जायेगा, उसी प्रकार एक लिपि द्वारा अर्न्तप्रान्तीय एकता की भावना उत्पन्न करने और उसे अग्रसर करने में सहायता मिलेगी। हम सब जानते हैं कि भाषा और लिपि में कोई अविच्छेद नहीं है और इन दिनों जब रोमन लिपि के प्रयोग के लिए विश्वव्यापी आन्दोलन चनल रहा है तो मैं नहीं समझता कि इस देश की भाषाओं के लिए एक ही लिपि की मांग करना कोई बहुत बड़ी मांग करना है। यह तो बहुत ही सौम्य प्रस्ताव है इसे स्वीकार करने में कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए। इसकी सुविधएं सुस्पष्ट है हमारे लिए एक दूसरे की भाषाओं और साहित्य का ज्ञान आवश्यक है क्योंकि इस प्रकार अर्न्तप्रान्तीय विरोधंव दुर्भावना दूर करने में और राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न करने में सहायता मिलेगी।

शिक्षा के माध्यम के सन्दर्भ में आचार्य जी का स्पष्ट मत था कि विश्वविद्यालय में शिक्षा का माध्यम राष्ट्रभाषा होनी चाहिए, प्रादेशिक भाषा नहीं। आज ज्ञान के प्रचार–प्रसार के लिए अन्तर्विश्वविद्यालयी सम्पर्क का प्रयास किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में यदि प्रादेशिक भाषाएं शिक्षा का माध्यम होगी तो आवागमन और सम्पर्क असम्भव हो जायेगा। अध्यापकों की नियुक्ति भी प्रोदशिक भाषा के आधर पर करनी पड़ेगी। जिससे चुनाव क्षेत्रा सीमित हो जायेगा और योगय अध्यापक नहीं चुने जा सकेंग। प्रान्तीयता की भावना बलवती होगी और शिक्षा का स्तर गिरता जायेगा। इसलिए शिक्षा का माध्यम एक और केवल राष्ट्र भाषा ही होनी चाहिए।

आचार्य जी ने अन्य भाषाओं के समान हिन्दी को भी समृद्ध बनाने का परामर्श दिया उन्होंने कहा–फमिथ्याभिमान से काम नहीं चलेगा अन्य भाषा–भाषी हमारी भाषा तब तक स्वीकार नहीं करेंगे, जब तक हमारा साहित्य उनकी भाषा के साहित्य से बढ़ा–चढ़ा न हो। इसीलिये नरेन्द्र देव जी ने जीवन में मातृभाषा की सेवा को ही मातृभूमि की सेवा का प्रथम सोपान माना था।

अनुशासन

अनुशासन शब्द स्वयं में अनुशासन के भाव को समाहित किये हैं। अनु+शासन अर्थात किसी शासन या व्यवस्था का अनुसरण करना अनुशासन है। अनुशासन में व्यक्ति एवं विद्यार्थियों को अपने कार्यों पर विचार करने, अपने मार्ग को निश्चित करने तथा बाधाओं को दूर करने के लिये शासन या व्यवस्था की आवश्यकता होती है। आचार्य जी का यह मानना था कि अनुशासन स्थापित करने के लिये विद्यार्थियों को अपने अन्दर एक आदत बनाने की जरूरत है और जिसकी प्रेरणा उसे भीतर से मिलती है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर 'स्व' की प्रवृत्ति होती है और यही प्रवृत्ति उसे प्रेरित करती है कि यह अपने आपको अनुशासित और व्यवस्थित करें। नरेन्द्र जी का कहना था कि अनुशसासन एक साध्न है जो विद्यार्थी की शिक्षा तथा उसके विचारों में सहायक होता है।

आचार्य जी अनुशासन को शिक्षा के लिये आवश्यक मानते थे। उनके अनुसार–प्राचीन अनुशासन, पद्धति आधुनिक लोकतांत्रिक युग के लिये उयुक्त नहीं है। वे चाहते थे कि विद्यार्थियों में स्वाशासन की भावना पुष्ट किया जाये, उनमें सामाजिक प्रबन्ध की क्षमता पैदा की जाये, स्कूल के अनुशासन और प्रबन्ध के स्तर को ऊँचा उठाया जाये।

आचार्य जी का कहना था कि आज चारों तरपफ हमें छात्रों में अनुशासनहीनता की शिकायतें सुनने को मिलती है जैसे–हड़ताल, तोड़–फोड़, कक्षा–बहिष्कार, शिक्षकों की पिटाई, राजनीति आदि। अनुशासनहीनता के अनेक कारण है क्योंकि आज का छात्र एक ऐसे उलझन व संघर्ष से भरे वातावरण में रह रहा है जहाँ जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। जिसके फलस्वरूप उनमें आक्रोश उत्पन्न होता है तथा बेकारी व आर्थिक कठिनाइयाँ उत्साह भग्नता को जन्म देती है। समाल की विश्रृंखलता विद्यार्थी के स्वभाव में परिलक्षित होती है और जिसके कारण अनुशासनहीनता जन्म लेती है ऐसे में हमें अनुशासन स्थापित करने के लिए रचनात्मक उपायों का सहारा लेना चाहिये क्योंकि ये मनोवैज्ञानिक भी है तथा छात्रों के जोश को एक सही दिशा भी प्रदान करता है।

आचार्य जी के अनुसार अनुशासन स्थापित करने के प्राचीन तरीकों का त्याग करके हमे आधुनिक तथा मनोवैज्ञानिक तरीकों को अपनाना चाहिये जिससे छात्रों में लोकतांत्रिक भावना का विकास हो सके तथा वे स्वयं अनुशासित हो सकें।

सन्दर्भ

1. रिसर्च सर्वेः सिक्स सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन 1993–2000 (Vol. 1 & 2) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधन एवं प्रशिषद परिषद, दिल्ली।
2. डा. सिकरवार मुक्ता, भारतीय समाज और प्रारम्भिक शिक्षा, आर. एस. इण्टरनेशनल, आगरा–2009.
3. बक्सी, आर. एस., नन्दा ज्योति, सिन्हा प्रयास चन्द्रा, आचार्य नरेन्द्र देव, अनमोल पब्लिकेशन, दिल्ली–2010.
4. डा.परीक मथसुरेश्वर, प्रो.शर्मा रजनी, उदीयमान भारतीय समाज और शिक्षा, शिक्षा, प्रकाशन, जयपुर–2011
5. देव, आचार्य नरेन्द्र, राष्ट्रीय और समाजवाद ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणसी, 1949.
6. देव, आचार्य नरेन्द्र, साहित्य, शिक्षा एवं संस्कृति, प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली, 1998.
7. देव, आचार्य नरेन्द्र, दि इण्डियन स्ट्रगिल नेक्स्ट पेफस, बाम्बे, 1946.
8. देव, आचार्य नरेन्द्र, टूवर्डस सोशलिस्ट सोसाइटी, अपाला पब्लिकेशन, सोसाइटी लिमिटेड, लखनऊ, 1988.
9. देव, आचार्य नरेन्द्र, सोशलिज्म एण्ड नेशनल रेवाल्यूशन पद्मा पब्लिकेशन, बाम्बे, 1946.